ISSN No-2031-5063 Vol.1,Issue.V/Nov 2011pp.1-4

Research Paper

# महिला और उद्यमिता

डॉ.रचना केषरवानी
(अतिथि व्याख्याता)

प्रस्तावना

''सामाजिक विकास में स्त्री की भूमिका''
इतिहास का विशय वस्तु विष्लेशण
पूनम केषरवानी (षोधार्थी), डॉ.रचना केषरवानी (अतिथि व्याख्याता)
डॉ. हरीसिंह गौर विष्वविद्यालय सागर (म.प्र.)

गुजरात की संस्कृति के निर्माण में स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका होने के बावजूद इतिहास के पन्नों में वह एक अदृश्य पात्र ही हैं। उसके कामों पर प्रकाश नहीं डाला गया है। अथवा उसकी उपेक्षा की गई है। स्त्री–इतिहास कोई अलिप्त ज्ञान की शाखा नहीं है। देशकाल के इतिहास के प्रमुख प्रवाहों का ही एक हिस्सा है। हालॉकि स्त्री–संबंधी अध्ययन उस इतिहास में जुड़ा हुआ नया प्रकरण निश्चय ही है यदा कदा जब कोई शोधार्थी इतिहास के पन्नो में स्त्री की शक्ति की क्षमता को पहचान पाता है तब वह इसकी चर्चा करता है। भारत में 1970 के बाद दलित, उत्पीड़ित वंचना एवं स्थायी वंचना के ग्रसित वर्गों पर पर इतिहासकारों का ध्यान गया। तब फिर स्त्री संबंधित् अध्ययन कैसे पीछे छूट सकता था?सामाजिक विकास, में संस्कृति की हिफाजत, एवं आर्थिक विकास में स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका अनादिकाल से रही हैं। स्त्रियों के इस अमूल्य योगदान पर प्रकाश न डाला जाए तो किसी भी समाज का, देश का इतिहास अधूरा होगा। स्त्री की भूमिका किस प्रकार से समाज को बदल सकती है इसके लिये अहमदाबाद के इतिहास को केस स्टर्डी के रूप में शोधपत्र में लिया जा रहा है।

अहमदाबाद, तुम्हारी जीवनकथा के पट पर और सबकी तरह नगर की स्त्रियॉ भी ताने–बाने की तरह बुनी हुई हैं। तुम्हारे नगरनामें में स्त्री कथाएं हर पन्ने पर लिखी हुई हैं। जो पढ़ेगा उसके पढ़ने में वे आऍगी। अहमदाबाद का उद्गम आशा भील से लगाकर अहमद शाह तक का समय और उसके बाद मराठों से लगाकर गॉधीयुग तक, आज तक की जीवन कथा को निर्मित करने में अहमदाबाद के अनेकानेक स्त्री–पात्रों ने भूमिका निभाई थी, निभाई है और निभाती रहेगें। इसी तरह से तुम्हारी भूमि पर अनेक स्त्री–पात्र उत्साह से खिले हैं। अहमदाबाद, यह तो तुम्हारी ही बलिहारी हैं।

अहमदाबादः गॉव से शहर बना। यहॉ उद्योग धंधे विकसित हुए, शहर का वैभव बढ़ता गया। उसकी हर सीढ़ी पर स्त्रियों के श्रम और उनकी होशियारी के पदचिन्ह पड़े हैं। इस हकीकत को कहीं कोई चूक न जाए। ये पात्र भले ही रानी हो या सेठानी या टोकरे वाली लक्ष्मी, लकी, लखमी या लकु। सीदी बसीर चौकीदार को उसने जो वचन दिया था उसकी याद है न जो आज तक वचनबद्ध रही है वह लक्ष्मी, लखमी, लखी, लकु! इसी का नाम है लक्ष्मीनगर। यह उल्लेख लखमी या लक्ष्मी नाम की उस मजदूर औरत की दास्तान से जुड़ा है जो अपनी सामाजिक सेवा के बल पर अहमदाबाद की एक बस्ती में स्वयं को सर्वश्रेश्ठ साबित कर सकी। हो सकता है कि कोई इतिहासकार किसी लक्ष्मी की न तो पीठ थपथपाये न ही उस पर अपनी स्वर्णिम स्याही खर्च करे मगर आम औरत को इस पर आल्हादित होना ही चाहिये।

इतिहास के पिछले पन्ने पलटने पर एक स्त्री–पात्र 'सेवा' की स्त्रियों को पसंद आया। वो है बेगम नूरजहॉ का! क्हते हैं कि वह अहमदाबाद की वतनी थी। यह बात एक अंग्रेजी पुस्तक में पढ़ी थी। लेकिन इतना तो सच है कि वे स्वतंत्र विचार वाली और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर थीं। भले ही जहॉपनाह जहॉगीर की बेगम, पटरानी रही हों। लेकिन उनकी अपनी मौलिक स्वतंत्र आय थी। उसकी अपनी शिपिंग कंपनी थीं कंपनी के जहाज खंभात से बसरा के बीच माल का व्यापार करते थे। खूब कमाते भी थे। लेकिन एक बार धंधे में नूरजहॉ को केश–फ्लो (मुद्रा के सहज आगम निर्गम) की परेशानी खड़ी हो गई। अहमदाबाद में जहॉगीर ने टकसाल की स्थापना की थी। नूरजहॉ ने वहॉ नये सिक्के बनाने का सुझाव दिया। लेकिन टकसाली ने इंकार कर दिया कि जहॉपनाह के हुक्म या उनकी मुहर के बिना सिक्के नहीं ढाले जा सकते। इसलिये नूरजहॉ ने सोने–चॉदी के अपने नाम के सिक्के ढलवाए (1618 के बाद)। और इस तरह से उन्होंने केश–फ्लो की समस्या का हल निकाला और अधिक दौलत कमाई। यह तो सुविदित है कि जहॉगीर ने अपने पिछले वर्श एशोआराम में बिताए थे। राजकाज बेगम नूरजहॉ सम्हालती थीं। राजकाज कोई भी सम्भाले मगर सिक्के ढलवाने का अर्थ समानान्तर सरकार के समान होता है। नूरजहॉ और जहॉगीर के मध्य तकरार के अनेक किस्सों में से एक यह भी प्रसिद्ध है किन्तु वह (नूरजहॉ) यहॉ भी अपनी चातुर्यता को प्रमाणित कर सकी।

अहमदाबाद के इतिहास के पन्ने आगे पलटने पर दिखाई दीं हरकुँवर सेठानी। बेहद संपत्र सेठ हठीसिंग केसरी सिंग की तीसरी पत्नि पच्चीस की उम्र में निःसंतान विधवा हो गई (1845)। सेठ की अकूत धन–संपदा, मिल्कियत, व्यापार, ऊँची प्रतिश्ठा आदि सबकुछ विरासत में उनके पास आ पड़ा। और इस सबको उन्होंने बुद्धिपूर्वक कैसे पार लगाया इसकी एक अद्भुत कथा है।

हरकुँवर सेठानी का भी शिपिंग का ही व्यापार था। ढेरों जहाजों के मालिक चीन के साथ रेशम और गॉजे का व्यापार करते थे और धन कमाते थे। अच्छे–अच्छे उद्योगपति, सेठ, पेशवाओं को ब्याज पर पैसे देते थे तथा और अधिक कमाई करते थे। सेठानी दानेस्वर भी उतनी ही थी! छप्पनिया अकाल पड़ा तब कहते हैं कि छह लाख के करीब लोग अहमदाबाद में हिजरत करके आए थे। इन तमाम पीड़ितों के लिए सेठानी ने सदाव्रत खोले और हर किसी को अनाज सुलभ कराया था। इसके अलावा आजीविका के लिए मंदिर, जिनालय, धरमशालाऍ बनवाईं। लेकिन उनका सबसे स्मरणीय दान तो अहमदाबाद में कन्या शिक्षा के लिए था। ऐसे समय में जब स्त्री

को पढ़ाई के साथ कुछ लेना–देना हो सकता है–ऐसा मानने के लिए भी समाज तैयार नहीं था। तब ऐसे में ऐसा जोखिमपूर्ण दान तो कोई साहसिक ही दे सकता है। साहस, सखावत और समायोजन से सराबोर का कैसा स्मरणीय संयोग, सुभग सुकेल अहमदाबाद की इस सन्नारी में हुआ। यह अद्‌भुत है।

रानी विक्टोरिया ने हरकुंवर सेठानी को 'नेक नामदार सखावते बहादुर' का खिताब दिया था। इस महान अहमदाबाद की विलक्षण स्त्री की साहसिक दानवीरता इतिहास में बेजोड़ हैं।

और अब कौन?प्यारे अनसूया बहन, 'बड़ी बहन' वे तो अपनी खास ही हैं सेवा को भी उन्हीं का फरजन्द कहा जा सकता है। अनसूयाबहन ने अहमदाबाद के श्रमिक वर्ग को नगर विकास की मुख्यधारा में खड़ा होने के लिए संगठित किया। मिलों में लगातार बारह घंटे की मजदूरी, सप्ताह में एक भी छुट्‌टी नहीं, भरपूर गंदगी के बीच निवास और इसके बरक्स पेट भरने लायक मजदूरी का मुआवजा भी नहीं ऐसे गरीब मिल मजदूरों की एक सभा साबरमती की रेत में उन्होंने 1918 में की, मिल मालिकों को हड़ताल का नोटिस दिया–आजीवन अन्याय के खिलाफ मिल मजदूरों की ओर से लड़ती रहीं। फिर भले ही सामने उनके सगे भाई क्यों न खड़ें हों। अनसूया साराभाई जन्म से मिल मालिक के घर की बेटी थीं। लेकिन सेठाई को ठुकराकर जीवन भर के लिए अहमदाबाद के गरीब मजदूरों की सेवक बन गईं। मजदूर मुहिम में गॉधीजी को आमंत्रित किया अनसूयाबहन ने, जिसके लिए दुनिया भर में अहमदाबाद की प्रतिश्ठा, हुई, उस औद्योगिक शांति का मूल, मजदूर मालिक के बीच न्यायपूर्ण मेल, अच्छे मेलमिलाप वाले संबंधों में निहित है। इस विचारधारा की प्रणेता हैं अनसूयाबहन।

अपना अहमदाबाद यह है– ईंट या संगमरमर या नक्काशी नहीं लेकिन अहमदाबाद की परिश्रमी, होशियार, साहसिक, ईमानदार जनता। जनता की उपलब्धि, नाजुक पल, परंपरा, संस्कृति, पहल करना ये सारे गुण ही अहमदाबाद का खमीर हैं। धनवान–गरीब, आबाल–वृद्ध, स्त्री–पुरूशों के धड़कते जीवन कोई चिड़ियाघर नहीं हैं न ही म्यूजियम हैं जिन्हें टूरिस्टों को शो–केस करना होता है। जनता की जीवनकथा ही अहमदाबाद की जीवन कथा है।

जनता के दैनंदिन जीवन व्यवहार, रहन–सहन, बोलचाल, विचार व्यापार आदि सब को देखने जानने में टूरिस्ट लोग अधीरता से दिलचस्पी लेते हैं।

इतिहास की दृश्टि से अहमदाबाद शहर के आर्थिक जीवन पर स्त्रियों का प्रभाव अधिकतर तो नेपथ्य में ही रहा है। नूरजहां एवं हरकोर सेठानी जैसे विरल व्यक्तियों की ख्याति को दर्ज किया गया है। साधारण स्त्रियों के दैनंदिन प्रभाव को बकोर पटेल और शकरी पटलानी को बालकथाओं में दर्ज किया गया है। हालॉकि यह इमेज भी घर का आर्थिक व्यवहार करने वाली मध्यवर्ग की गृहणी पर आधारित है। ऐसी अनेक स्त्रियां रही हैं। और अभी भी हैं किन्तु एक औरत के नाम के बगैर अहमदाबाद का जिक्र अधूरा है, वह हैं इला बेन भट्‌ट, ''सेवा'' की प्रणेता।

गुजरात की इला बेन भट्‌ट नें स्त्रियों के स्वयं आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की इन्होने वकालत की शिक्षा ग्रहण करके ''मजदूर महाजन संघ'' में कानूनी सलाहकार के रूप में कार्य किया फिर उन्होने वहां पाया कि जो मजदूर बेकार हो जाते हैं या उन्हें किसी कारण वश काम से निकाल दिया जाता है तो इस कारण उनकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती थी और उनकी स्त्रियां और बच्चों को भी बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। इसलिये उन्होने ऐसी स्त्रियों का एक संगठन बनाया जिससे वे स्वयं रोजगार कर सकें तथा अपने तथा अपने परिवार का भरण पोशण कर सकें। इस संगठन का नाम उन्होने ''स्वशीय महिला सेवा संघ'' रखा जिसमें छोटा मोटा धन्धा करने वाली स्त्रियां उसकी सदस्य बनी। यह संगठन सन् 1972 में स्थापित हुआ तथा अंग्रेजी भाशा में इसको श्ैमसि म्उचसवलमक ॅवउमद ोवबपंजपवदश के नाम से जाना गया। इसे अब एक राश्ट्रीय ट्रेड यूनियन के नाम से मान्यता प्राप्त हो चुकी है। यह अपने आप में पहला महिला यूनियन है जिसमें करीब 12–13 लाख महिलाऍं कार्यरत है तथा जिसकी शाखाऍं 10 राज्यों में 13 सेंटर के रूप में स्थापित हैं इन महिलाओं को इस संगठन से आर्थिक सहायत भी प्राप्त होती है। संगठित महिलाऍं यहां अपने अपने बचत खाते खोलती हैं। अपनी बची हुई रकम इसमें जमा करती हैं तथा यूनियन कम से कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराती हैं जिससे वे अपने व्यवसाय के लिये जरूरी सामान खरीद सकें जैसे सिलाई करने वाली महिलाओं के लिये मशीन खरीदना। इन महिलाओं के बच्चों के लिये बालवाड़ी की सुविधा भी इस यूनियन द्वारा उपलब्ध करायी जाती है। इस प्रकार देखें तो एक महिला अपने वुद्धि वल और आत्म निर्णय के द्वारा कितनी बेसहारा औरतों को स्वयं सक्षम बनाने में सहायता प्रदान कर रही है।

इलाबेन भट्‌ट द्वारा संचालित यह संगठन अब अकेले अहमदाबाद तक सीमित नहीं इस संगठन ने लखनऊ चिकन की कारीगर महिलाओं, बनारस, मिर्जापुर, गोंदिया की बीड़ी श्रमिक महिलाओं के चेहरों पर मुस्कान देने का कार्य भी किया है। यह विश्लेशण यह स्पश्ट करता है कि नूरजहॉं से लेकर इलाबेन भट्‌ट तक स्त्री की लक्ष्य पर केन्द्रित तीक्ष्ण दृश्टि और उधम के प्रति समर्पण किसी भी समूह, संवर्ग और समाज को सुविकसित कर सकता है।

स्त्रियों के क्षेत्र में सेवा का योगदान महत्वपूर्ण हैं। अहमदाबाद शहर की हजारों श्रमिक स्त्रियों को इतिहास के बृहद फलक पर लाकर उन्हें दृश्यमान बनाया है, संगठित किया है और जिसके वे हकदार हैं ऐसे गौरव (और आय) का (श्रमिक स्त्रियों को) विश्वास दिलाया है 'सेवा' ने स्त्रियों के नए समूहों को नए दृश्टिकोण से नये युग के लिए संगठित किया है। अहमदाबाद के इनफॉर्मल अर्थतंत्र में सेवा का योगदान साल दर साल बढ़ता और बदलता रहता है।

## *संदर्भ ग्रंथ सूची*


1. क्मअप ंदक जैंदहंउनजीं ;1977द्धरू । बेंम ेजनकल वि ूवउमद म्दजतमचतमदमनते पद ॥िउकंइंक क्पेजतपबजए ळनरतंजण
2. ळंदमेंदए ैण ;2003द्धरू ेजंजने वि ूवउमद म्दजतमचतमदमनते पद प्दकपं छमू क्मसीपण झंदपैीां च्नइसपबंजपवदण
3. भ्नेंपदए ॥इंत ंदक झींद ;2001द्धरू श्डवजपअंजपवदंस बिजवते वित तनतनस कमअमसवचउमदज चमतेवददमसश् श्रवनतदंस व बिवउउनदपजल ळनपकंदबम ंदक त्मेमंतबीए 18;1द्धए 17.24ण
4. जीं ानत ;2000द्धरू श्म्गचसंपदपदह म्दजतमचतमदमनतपंस ेनबबमेरू । ब्वदबमचजनंस डवकमसश्
5. ूण्उंचेवप्दिकपंण्बवउ
6. ूण्पइमण्वितह
7. अनसूया : राश्ट्र विकास में स्त्री एवं बालशक्ति का संयाजन'' 2011
8. यू.जी.सी. क्षेत्रीय ऑफिस : ''उद्यम आलोक'' वर्श 2005 ऑफिस भोपाल (म.प्र.)
9. उद्यमिता विकास केन्द्र ''लघु उद्योग एवं स्वरोजगार परियोजनाऍं खण्ड–2'' सेडमेप (भोपाल)